UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

ISSN No. 2394-5990

54. 'दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में विश्वशान्ति का संदेश'

- प्रा. डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण ——— 189

55. विश्वशांति के लिए कबीरा खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ

- प्रो. (डॉ.) सुवर्णा नरसु कांबळे ——— 193

56. कहानीकार: मुंशी प्रेमचंद

-डॉ. काकासो बापूसो भोसले ——— 196

57. विश्वशांति का धरोहर : 'संशय की एक रात'

-डॉ. श्रीकांत पाटील ——— 200

58. समकालीन स्त्री कहानीकारों की कहानियों में चित्रित दाम्पत्य जीवन

-डॉ.मुदनर दत्ता सर्जेराव ——— 204

59. विश्वशांति और कबीर का योगदान

-डॉ रूपा चारी ——— 207

60. इक्कीसवीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में विश्वशांति का रूप वैविध्य

-डॉ. प्रकाश राजाराम मुंज ——— 211

61. विश्वशांति एवं विकास में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य का योगदान

-डॉ.गोरखनाथ किर्दत ——— 214

62. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी काव्य का योगदान (संत रैदास के विशेष संदर्भ में)

-डॉ. सतीश अर्जुन घोरपडे ——— 218

63. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी के पत्रकारिता का योगदान

-डॉ.देशमुख अफशाँ बेगम अहमद अली ——— 222

64. विश्वशांति और विकास में हिंदी काव्य का योगदान संदर्भ –तुलसी का 'श्रीरामचरित मानस'

- डॉ. आर. पी. भोसले ——— 226

कहानीकार: मुंशी प्रेमचंद

हिंदी विभाग
रयत शिक्षण संस्था का,डॉ. पतंगराव कदम महा.
रामानंदनगर (बुर्ली) तह. पलूस,
जि. सांगली पि.416308

"मेरे ख्याल से प्रेमचंद का लेखन उन सभी लेखकों से अधिक प्रासंगिक है जो केवल रचनात्मक स्तर पर था तो क्रांतिकारी परिस्थितियों का संसार खडा करते है यो देहभोग को ही मानवीय नियति मान लेते है।"[1]

अपने काल के चिंतन और संवेदना को संप्रेषित करना ही सार्थक या प्रासंगिक माना जाता है। लेखक का अनुभव उसके समय और सामाजिक परिवेश से बनता है। अपने समय की समझ और चिंतन के साथ ही रूढि परंपरा की जानकारी भी लेखक के लिए आवश्यक होती है। अनुभव और ज्ञान के इसी समीकरण से ही लेखक में कालातीत दृष्टि का जन्म होता है। ऐसा लेखन स्थायी और कालजयी होता है।

प्रेमचंद अपने समय की मानसिकता और पारंपारिक चिंतन बोध से जुडे हुए प्रतीत होते है। इनका लेखन मूलतः ग्रामीण समाज के भीतर बनते: बिगडते हुए मानवीय सम्बन्ध का लेखन है। मानवीय रिश्तों को निरंतर तोड़ने और आहत करने का कार्य विषम आर्थिक परिस्थितियाँ करती है। आर्थिक अभाव से पीड़ित व्यक्ति के लिए सारे नैतिक और सामाजिक मूल्य निरर्थक और अनावश्यक प्रतीत होते है।

प्रेमचंद विश्व के उन महान साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने शोषित पददलित एवं अपमानित मेहनत कश और सामंती विलासिता जैसे आम लोगों के अपने लेखन का विषय बनाया है। विषयवस्तु के प्रति इनके समान समर्पित लेखक बहुत ही कम हुए है।

विश्व साहित्य के स्तर पर प्रायः यही दिखायी देता है कि अधिकांश उपन्यासकार और कहानीकार अपना विषय उच्च वर्ग तथा सांमती लोगों के बीच ही ढूढ़ते है, शायद मध्यवर्ग तक इसके नीचे उतरने का कष्ट कुछ ही साहित्यकार करते है उनमें प्रेमचंदजी का नाम शीर्षस्थ है। इसलिए अपनी कृतियों में जहा तक बन पड़ा है, प्रेमचंद ने इन प्रताडित मूक लोगों के दर्द को सशक्त वाणी देने का प्रयास किया है। जैसे उदाहरण के तौर पर निम्नलिखित कहानी है।

'ठाकुर का कुआँ' कहानी बड़ी छोटी है। इससे छोटी दूसरी कहानी प्रेमचंद जी ने नहीं लिखी । केवल तीन पेज वाली कहानी। प्रेमचंद संप्रेषित करना चाहते है कि प्रभाव की दृष्टि से कहानी बेजोड़ और अप्रतिम है। कहानी केवल यह है कि जोखू एक अछूत है, बीमार है। प्यास लगने पर उसकी पत्नी गंगी उसे पानी देती है। लेकिन वह पानी पीने लायक नहीं हैं, बदबू आ रही है। जोखू के लाख मना करने पर भी गंगी ठाकुर के कुएँ से ताजा पानी लाने चली जाती है। जो कुआँ अछूतों को निषिद्ध है। रात के समय कुए पर जा कर पानी भरने का साहस करती है। पानी भर भी लेती है, तभी ठाकुर साहब सामने के अपने घर से निकलते है। खाली हाथ जब वह अपनी झोपडी में पहुँचती है तो देखती है कि जोखू लोटे से मुँह लगाये वही बदबूदार पानी पी रहा है।

इस कहानी से यह बात उजागर होती है कि उन्होंने शोषण के हरसम्भव स्रोत एवं हथियार को बेनकाब किया है। शोषकों को नंगा किया है तथा शोषितों को हर जगह विरोध और प्रतिकार करते दिखलाया है। इस कहानी में उन्होंने गंगी को एक विद्रोही के रूप में चित्रित किया है। जो अपने को अछूत मानने से साफ इन्कार करती है और कहती है:

"हम क्यों नीच है और ये लोग क्यों उँच है ? इसलिय कि ये लोग गले में तागा डाल देते है? यहाँ तो जितने है, एक से एक छँटे हैं। चोरी ये करें , जाल: फरेब ये करें, झूठे मुकदमें ये करें, अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गडेरियो की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया । इन्ही पण्डित जी के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहुजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते है। काम करा लेते हैं मजदूरी देते नानी मरती हैं।"[2] स्पष्ट है कि इस कहानी में जाति: भेद शोषण का निकृष्टतम रूप है।

यहाँ पर शोषितो की दूसरी श्रेणी में नारी को रखा गया है। कुऐ पर गंगी, तथा कुछ औरते आपस में बाते करते हुए मर्द की गुलाम कहती है। जैसे कि नारी हमेशा शोषित रही है।

ISSN No. 2394-5990

वार्तालाप देखिए: ''हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मर्दों को जलन होती है। .... वहाँ काम करते करते मर जाओ पर किसी का मुँह ही सीधा नहीं होता।''[3] इसमें नारी मुक्ति की छटपटाहट है।

पूस की रात विवशता की आँच में झुलसी मानव इच्छा की आपूर्ति लेकिन भारमुक्तता की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। हल्कू के जीवन में कभी विराम न रहा हो, जैसे चिंता सिर से उतरने का नाम ही नहीं लेती और नींद का आनंद जैसे इस जीवन से दूर भाग गया हो कि मार्मिक गाथा इस कहानी में हैं।

पूरे परिवेश मे हल्कू की बेचैनी एक मीठी नींद सो लेने के लिए रही है और अन्त का सोना उसकी बेचैनियों की मुक्तता नहीं बल्कि अगले क्षण में पैदा होनेवाले सोच का संकट है। कहानी का प्रारंभ हल्कू की कर्ज से छुटकारा पा लेने की चिंता से होता है: ''हल्कू ने आकार स्त्री से कहा सहना आया है लाओ जो रूपये रखे हैं उसे दे दूँ, 'किसी तरह गला तो छूटे।''[4]

लेकिन एक ओर सहना को टालने के लिए, दूसरी ओर पत्नी की खुशामद मालूम है कि सहना से निब्याज तो हो सकता है परंतु पत्नी से निबहना ? खुशामद के बाद के बाद भी: ''कर चुके दूसरा उपाय! जरा सुनूं, कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा कम्मल? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मै कहती हूँ, तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर - मर काम करो, उपज होतो बाकी दे दो, चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए ही हमारा जनम हुआ है। पेट के लिए मजूरी करो ऐसी खेती में बाज आये। मैं रूपये न दूँगी - न दूँगी।''[5]

सहना का तकादा और पत्नी की झिडकी: इन दोनों के बीच हल्कू की मानसिकता का घूटन अपने आपमें एक पीड़ादायक परिस्थिति है। वैसी खेती से क्या फायदा जिसकी उपज सिर्फ कर्ज चूकाने के लिए ही हो। और इसीलिए एक सामान्य किसान का कर्ज में टूटते जाने की विवशता और मजदूर में बदलते चले जाने की त्रासदी न केवल हल्कू की है बाल्कि सम्पूर्ण भारतीय परिवेश में कृषक जीवन के सोच में वर्तमान है।

'कफंन' कहानी के केन्द्रीय पात्र घीसू और माधव भारतीय भूमिहीन किसानों के उस हिस्से के प्रतिनिधि है, जो शोषण, दमण, उत्पीड़न के भयंकर आघात से चूर - चूर होकर श्रम, श्रमके प्रतिफल, सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्धों और प्रत्यक्षतः सभी प्रकार के मानवीय शीलगुणों से एकदम वंचित, बेगाना और असम्बन्ध हो गया है फलतः जो आकाश वृत्ति के सहारे जिंदगी गुजारने वाले 'लम्पट सर्वहारा' के वर्ग में रूपांतरित हो गया है, और इस तरह अपनी स्वाभाविक ट्रेंजेडी की खूँखार गिरफ्त में जकड़ा जा चुका है।

प्रेमचंद जीवन सम्बन्धी अपने गहरे अनुभव से जानते है कि खूँखार खलनायक के हाथों तबाह होने के बावजूद ''आखिरकार मनुष्य संजीदा नजर से जीवन की वास्तविक हालातों को, मानव - मानव के आपसी सम्बन्धों को देखने के लिए मजबूर हो जाता है।''[6]

घीसू - माधव के साथ भी यह मजबूरी घटित होती है - उनकी जो चेतना यथार्थ की पथरीली जमीन से टकराकर कुन्द हो चुकी है; वही चेतना शराबखाने के नशीले वातावरण और शराब के तूफानी नशे की करारी चोट खाकर जैसे हड़बड़ाकर आँखे खोल देती है, अपना वास्तविक व्यक्तित्व ग्रहण करने लगती है और जीवन के बोध से धडक उठती है: ''कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते - जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफन चाहिए।''[7]

''दुनिया का दस्तुर है, नहीं लोग बाँमनों को हजारों रूपये क्यों दे देते है? कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं।''[8]

''बड़े आदमियों के पास धन है, फूँके। हमारे पास फूँकने को क्या हैं?''[9]

''वह (बुधिया) न बैकुंठ में जायेगी तो क्या ये मोटे - मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते है, और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते है और मंदिर में जल चढ़ाते है?''[10]

और जीवन के बोध की यह धड़कन अपनी चरम परिणाति प्राप्त कर लेती है -''भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूड़ियों का पत्तल उठाकर एक भिखारी को दे दिया, जो खडा इनकी ओर भूखी आँखो से देख रहा था। और देने के गौरव, आनन्द और उल्लास का अपने जीवन में पहली बार अनुभव किया।''[11]

घीसू - माधव शराबखाने के सामने नशे में चूर होकर 'ठगिनी, क्यों नैना झमकावै- का गीत गाकर गिर पड़े। शोषक व्यवस्था के सामने घीसू माधव की असहाय पराजय के रूप में अ - मानवीकरण की यंत्रणा का साक्षात्कार मुकम्मल हो जाता है और कफन कहानी की पीड़ा सम्पूर्ण मानव - जाति की पीड़ा का संक्षिप्त इतिहास बन जातीं है।

''सवा सेर गेहूँ ''कहानी धर्म, ईश्वर और स्वर्ग - नरक के नाम पर व्यक्ति के शोषण की एक मार्मिक गाथा है। पाठक इस वृत्तांत को कपोल - कल्पित न समझिये। यह सत्य घटना है।''[12] का स्पष्ट चित्र है।

यह कहानी धर्म की ओट में हो रहे शिकार का जीवंत तल्ख एवं सच्चा चित्र प्रस्तुत करती है। धर्म के नाम पर अधर्म का पासा फेकनेवाले विप्रजी की इस धरती पर कोई कमी नहीं है। जिनके - सवा सेर गेहूँ - की कीमंत व्यक्ति की पूरी जिंदगी एवं

गुलामी ही नहीं बल्कि मौत और फिर उसके बाद पीढ़ी – दर – पीढ़ी का शोषण है।

शंकर गाँव का साधारण किसान, इमानदार, संतोषी, प्रसन्न और भगवान के भक्तों के प्रति वफादार है। शंकर साधू दरवाजे से भूखा न जाए इस चिंता में डुबे हुए होते। एक दिन आधुनिक महात्मा घर आये परंतु घर में गेहूँ नहीं थे । आतिथ्य चिन्ता से विप्रजी के घर से गेहूँ लाया, महात्माजी की क्षुधा पूर्ति की और महात्माजी आशीर्वाद देकर चले गये ।

शंकर ने विप्रजी को गेहूँ के बदले पसेरी खलिहानी दी और मुक्ति की साँस ली। परंतू लम्बे अंतराल के बाद भाई से बँटवारा हुआ सिर्फ नाम का किसान रह गया। ''खेती केवल मर्यादा – रक्षा का साधन मात्र रह गयी। जीविका का भार मजूरी पर आ पड़ा ।''[13]

विप्रजी ने इस मौके का फायदा उठाकर सवा सेर उधार गेहूँ के पाँच मन का हिसाब शंकर के माथे पर टोका । शंकर ने आरजू एवं मिन्नते करने के बाद भी दस्तावेज लिखा गया। उस सवा सेर गेहूँ के कुल साठ रूपये, तीन रूपये सैंकड़ों सूद की दर से शंकर आखिर बीस वर्षों तक विप्रजी की गुलामी करके आँखे मूँद ली। शंकर की मुक्ति बेटे के लिए फासी का फंदा बनी। विप्रजी ने ''उसके जवान बेटे की गरदन पकडी आज तक वह विप्रजी के यहाँ काम करता है। उसका उद्धार कब होगा होगा भी या नहीं, ईश्वर ही जाने।''[14]

इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट चित्रित है कि जब तक इस प्रकार की धर्मान्धता का दौर समाज में चलता रहेगा, इस प्रकार की जाति – व्यवस्था का मद सत्ताधारियों में छाया रहेगा। तब तक हर शंकर का जीवन –सवा सेर गेहूँ–के सुखा– मुख में आत्मसात होता चला जायेगा।

'शतरंज के खिलाडी' इस कहानी में प्रेमचंद जी ने जिस युग का चित्रण किया है, वह सारा युग ही समसामयिक घटनाओं से बेखबर और आत्मकेंन्द्रित था। यह आत्मकेंद्रण किसी योग साधना या समाधि – लाभ में नहीं बल्कि शतरंज का खेल खेलने तथा व्यसन में लिप्त हो जाने में था। परिणाम यह हुआ कि लखनऊ का नवाब बन्दी बना लिया गया और सारा शहर बडी आसानी से अँग्रेजों के अधिकार में आ गया। अपनी कमर में सदैव तलवार रखनेवाले मिर्जा और मीर जो कभी उस सेना में थे अब वे भी शतरंज खेलने में निमग्न रहे। प्रेमचंद जी वस्तुत: लखनऊ शहर, वाजिद अलीशाह और मीरजा तथा मीर जैसे चरित्रो के माध्यम से उस युग की आत्मनिष्ठ और मानसिकता का संकेत दे रहे है। जिसके कारण लखनऊ शहर ही नहीं, यह संपूर्ण देश शताब्दियों तक विदेशियों के हाथों गुलाम बना रहा। इसका सर्वोत्तम प्रमाण कथा के अंत का अंश है – ''अपने बादशाह के लिए जिनकी आँखें मे एक बूँद आँसू न निकला, उन्ही दोनो प्राणियों ने शतरंज के वजीर की रक्षा में प्राण दे दिये''[15]

कहानी से स्पष्ट है कि मिर्जा और मीर जैसे पात्र कायर नहीं, वीर है। परंतु वे अपने शहर या नवाब की रक्षा का दायित्व नहीं लेते। अत्यधिक विलासी आत्मकेंन्द्रित मानसिकता के कारण सामंत एवं नवाबों के साथ एकता स्थापित नहीं करते। ये सामंत भी विलासी प्रवृत्ति के कारण जनता एवं मिर्जा – मीर जैसे पात्रों से भी दूर चले गये थे। इन पात्रों का न कोई भूत है और न भविष्य। वे केवल वर्तमान और विलासपूर्ण व्यसन में लिप्त, अत्यंत मग्न एवं संकुचित है।

डॉ. निकुंज निलिमा ''शतरंज के खिलाडियों के माध्यम से संवेदनशील कथाकार ने एक संपूर्ण युग को प्रयोजन हीन सक्रियता और विस्मृत राष्ट्र – चेतना का संकेत दिया है। सागर सदृश्य इस युग को कहानी के छोटे से गागर में भरकर प्रस्तुत करना कथाकार का प्रशंसनिय कौशल है।

निष्कर्ष :

रूप में कहा जाता है कि, प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों दृवारा अपने समय की मानसिकता और पारंपारीक बोध को स्पष्ट किया है। जो शोषित, पददलित, अपमानित एवं मेहनतकश और सामंती विलासिता में रहे। ठाकुर का कूआँ कहानी में जाति – भेद, शोषण के निकृष्टतम रूप जोखू और गंगी है। पूस की रात कहानी में सन्पूर्ण भारतीय परिवेश में किसान जीवन का हल्कू और स्त्री, कफन कहानी में संपूर्ण मानव जाति की पीड़ा को घीसू माधव और शतरंज के खिलाडी कहानी में एक संपूर्ण युग को प्रयोज नहीन सक्रियता और विस्मृत राष्ट्रचेतना का संकेत मीर और मुंशी तथा बाजिद अली शाह द्वारा दिया गया है।

आधार ग्रंथ :

1) प्रेमचंद: ठाकुर का कूआँ, मानसरोवर भाग 1
2) प्रेमचंद: सवा सेर गेहूँ, मानसरोवर भाग 4
3) मुंशी प्रेमचंद: पुस की रात, कामिनी प्रकाषन, शाहदरा दिल्ली
4) डॉ. विजय एस. सौजित्रा: प्रेमचंद की पच्चीस श्रेष्ठ कहानियाँ, चिंतन प्रकाषन, कानपूर

संदर्भ ग्रंथ :

डॉ. दिनेष प्रसाद सिंह: प्रेमचंद विविध आयाम, अनुपम प्रकाषन पटना – 1983

ISSN No. 2394-5990

Foot Notes :

1) डॉ. दिनेश सिंह – प्रेमचंद: विविध आयाम: अनुपम प्रकाशन पटना पृ. 47
2) प्रेमचंद: ठाकूर कुआँ मानस भाग 1 पृष्ठ 143
3) प्रेमचंद: ठाकूर कुआँ मानस भाग 1 पृष्ठ 144
4) प्रेमचंद: पूस की रात पृष्ठ 5
5) प्रेमचंद: पूस की रात: पृष्ठ 5
6) डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह: प्रेमचंद विविध आयाम पृष्ठ 88
7) डॉ. विजय एस. सौजित्रा: प्रेमचंद की पच्चीस श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ 173
8) डॉ. विजय एस. सौजित्रा: प्रेमचंद की पच्चीस श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ 174
9) डॉ. विजय एस. सौजित्रा: प्रेमचंद की पच्चीस श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ 174
10) डॉ. विजय एस. सौजित्रा: प्रेमचंद की पच्चीस श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ 175
11) डॉ. विजय एस. सौजित्रा: प्रेमचंद की पच्चीस श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ 175
12) प्रेमचंद: सवा सेर गेहूँ, मानसरोवर भाग – 4 पृ. 196
13) प्रेमचंद: सवा सेर गेहूँ, मानसरोवर भाग – 4 पृ. 190
14) प्रेमचंद: सवा सेर गेहूँ, मानसरोवर भाग – 4 पृ. 196
15) मुंशी प्रेमचंद: पुस की रात, पृष्ठ 85